RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-08
August-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i08.024

गाँधी और गाँधीवादी चरण 1919 से 1947 तक के विभिन्न आन्दोलन

अनिल पासवान
शोध छात्र, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 17 August 2020

Keywords
गाँधीवादी, आजादी, भारतीय इतिहास

ABSTRACT

भारतीय इतिहास में सन 1919 से 1947 तक के काल को गाँधीवादी चरण कहा जाता है | भारत की आजादी के संघर्ष में यह काल महत्वपूर्ण स्थान रखता है | औपनिवेशिक शासन के खिलाफ तथा देश की आजादी के लिए संघर्ष गाँधी के राजनीति में आने के पहले ही प्रारंभ हो गया था तथा औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेकने की कोशिश की जाती रही परन्तु संघर्ष अपने चरम सीमा पर गाँधी के आगमन तथा कुशल नेतृत्व के बाद होता है |

9 जनवरी 1915 ई० में गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे और भारत की आजादी के लिए चल रहे विभिन्न आन्दोलनों, जनसंघर्षों का हिस्सा बनकर अनेक आन्दोलनों का सफल नेतृत्व प्रदान किया | इस आलेख में हम 1919-1947 से पहले गाँधीजी भारत में अनेक छोटे-बड़े आंदोलनों का नेतृत्व किया जिससे उनकी पहचान राष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में हो गया था | सन 1947 में चंपारण नील किसानों का नेतृत्व, 1918 में अहमदावाद मील मजदूरों का आन्दोलन, खेड़ा के किसानों का लगान नादायगी आन्दोलन इत्यादि | किसान-मजदूरों के कुशल नेतृत्व तथा उनकी मांगों को दिलाकर अपनी नेतृत्व क्षमता का लोहा मनबा चुके थे और अपनी पहचान राष्ट्र नेता के रूप में करबा चुके थे | आगे चलकर "असहयोग आन्दोलन,1920", सविनय अवज्ञा आन्दोलन, 1930" तथा 1942 में " भारत छोड़ो" जैसे राष्ट्रीय आन्दोलनों का सफल नेतृत्व किया | गाँधी और कांग्रेस के नेतृत्व में भारत की आजादी 15 अगस्त 1947 में मिली|

गाँधी और गाँधीवाद

गाँधी और गाँधीवाद परिस्थितियों की उपज कहा जाता सकता है, क्योंकि गाँधीजी खुद किसी "वाद" के खिलाफ थे | उन्होंने न तो किसी मौलिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया और न ही किसी नई चिंतन को जन्म दिया बल्कि पहले से विद्यमान नियमों और सिद्धांतो के दोहराने का प्रयास किया | राष्ट्रिय आन्दोलन को यदि जनांदोलन में तब्दील करने में गाँधी के नेतृत्व, विचार, कार्यक्रम एवं कार्यशैली की अहम् भूमिका रही तो इसके लिए तत्कालीन परिस्थितियां भी कम जिम्मेवार न थी |

सर्वधर्मसमभाव तथा ट्रस्टीशिप के कल्पना के जरिये उपनिवेशवाद-विरोधी मोर्चे का निर्माण किया और राष्ट्रीय आन्दोलन को जनांदोलन में परिणत करने में सफल रहे | गाँधी को न तो राजनितिक चिन्तक न ही किसी सिद्धांत-निर्माता होते हुए भी इस बात का श्रेय देना चाहिए की उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को नया तेवर देते हुए औपनिवेशिक सत्ता के सामने संकट खड़ा कर दिया जिसका समाधान ब्रिटिश सरकार के पास नहीं था |

प्रारंभिक चरण में गाँधी की राजनीति उदारवादियों की तरह प्रतिवेदन, प्रार्थना और प्रतिरोध (PPP) पर आधारित थी | उदारवादियों के तरह औपनिवेशिक सत्ता पर दबाव बनाकर रियायतें प्राप्त करने में विश्वास करते थे | समझौते की राजनीति और इनके आन्दोलन भी अहिंसक होते थे | पर कभी-कभी गाँधी इस सीमा को लाँघते हुए नजर आते हैं | एक सीमा के अन्दर अगर यह रणनीति समर्थ नहीं है, तो गाँधी को संवैधानिक दायरे से बाहर निकलकर उसे असहयोग एवं सविनय अवज्ञा के रूप देने से भी परहेज नहीं करते | स्वदेशी तथा बहिष्कार का राजनितिक हथियार का इस्तेमाल करते हुए औपनिवेशिक सत्ता के मूल पर प्रहार की रणनीति अपनायी |

स्वराज की संकल्पना

गाँधी जी 1909 ई० में "हिन्द स्वराज" नामक पुस्तक की रचना की | 1920 में गाँधी ने स्वराज की तस्वीर पेश करते हुए कहा कि "मेरा स्वराज भारत के लिए संसदीय शासन की माँग है, जो व्यस्क मताधिकार पर आधारित होगा |" मेरा स्वराज जन-प्रतिनिधियों द्वारा संचालित ऐसी व्यवस्था होगा जो जन आवश्यक्तायों, उसकी अपेक्षाओं तथा जनाकाक्षाओं के अनुरूप

RRIJM 2015, All Rights Reserved

होगा | उनकी स्वराज की कल्पना स्थिर नहीं बल्कि गतिशील तथा विकसनशील थी | हिंसा के विरोधी होते हुए भी काफी आक्रामक रूप अख्तियार कर लेते थे जैसा की असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आन्दोलन के दरम्यान देखा गया | असहयोग का आह्वान करते हुए एक साल के अन्दर स्वराज की प्राप्ति की बात की | अगस्त 1942 में "अंग्रेजों भारत छोड़ो" का नारा देते हुए "करो या मरो" का आह्वान किया | गाँधी का स्वराज आत्म-निर्णय तथा स्वाधीनता की मांग पर बल देता था | उनकी स्वराज की कल्पना व्यापक है | वे न सिर्फ राजनीतिक स्तर पर विदेशी पराधीनता से मुक्ति ही नहीं चाहते थे वरन सांस्कृतिक एवं नैतिक स्वाधीनता के भी पक्षधर थे | उनके स्वराज का स्वरुप अधिक मानवीय और दीन-दुखियों के पक्ष में कहीं अधिक होता था क्योंकि यह आत्म-संयम, ग्राम-राज्य एवं सत्ता के विकेंद्रीकरण पर बल देता है |

गाँधी की अहिंसा और सत्याग्रह सम्बन्धी विचार

गाँधी की अहिंसा का विचार टॉलस्टॉय से प्रभावित था | वे साधन और साध्य दोनों की पवित्रता पर बल देते थे | उनकी सत्य और अहिंसा हमें सत्य के लिए प्रेरित करती है | यही सत्य के लिए आग्रह हमें संघर्ष के लिए प्रेरित का आह्वान भी | गाँधी ने इतिहास से प्रेरणा ग्रहण करते हुए हिंसा का सहारा लेनेवोले क्रांतिकारियों के हश्र को देखा | औपनिवेशिक सत्ता एवं प्रशासन ने ऐसे हिंसात्मक आन्दोलन को निर्ममतापूर्वक कुचल डाला | इसलिए राष्ट्रिय आन्दोलन को व्यापकता देते हुए जन-सहभागिता का विस्तार दिया |

गाँधी ने सत्याग्रह के लिए हड़ताल, असहयोग, सविनय अवज्ञा और उपवास या भूख-हड़ताल को साधन बनाया | असहयोग अहिंसक सत्याग्रह का एक महत्वपूर्ण साधन है | इसके तहत आन्दोलनकारी ऐसी सरकार के साथ किसी भी प्रकार का सहयोग से इंकार करते हैं जो भ्रष्ट हो और जो जनांकाक्षाओं के अनुरूप काम नहीं कर रही है | "सविनय अवज्ञा" के संकल्पना से गाँधी का परिचय दक्षिण अफ्रीका में जेल-प्रवास के समय हुआ जब उन्होंने हेनरी डेविड थोरो की पुस्तक "ऑन सिविल डिसऑविडीयेन्स" (On Civil Disobedience) पढ़ने का अवसर मिला | सविनय अवज्ञा से प्रभावित होकर सत्याग्रह की तकनीक के रूप में आजमाया | इसके तहत् आन्दोलनरत् जनता अपने प्रतिरोध को असहयोग से आगे ले जाकर और अहिंसक तरीके से सरकारी कानूनों और नीतियों को मानने से इंकार करती हुई उसका उल्लंघन करती है | इसी फार्मूला का प्रयोग गाँधी ने 1920 में असहयोग के रूप में तथा 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में आजमाया जो काफी हद तक सफल रहा | यह आत्मशुद्धिकरण का जरिया भी है और आत्मोत्पीड़न के जरिये अपनी वाजिब मांगों को मनवाने हेतु नैतिक दबाव भी |

गाँधी के सत्याग्रह की संकल्पना कोई मौलिक संकल्पना नहीं थी बल्कि यह तिलक के निष्क्रिय प्रतिरोध का विकसित रूप था | सत्याग्रह का प्रयोग वे 1906 में दक्षिण अफ्रीका में कर चुके थे | प्रवासी भारतियों के अधिकारों एवं सम्मान के लिए रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष के क्रम में इसका सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया था | उनके अनुसार अन्याय के सामने कायर दिखने की अपेक्षा हिंसा बेहतर है | वे अहिंसा को सबलों का अस्त्र मानते थे न की निर्बलों को | 1919 से 1947 के चरण में गाँधी ने अहिंसात्मक सत्याग्रह का अकाट्य रणनीति के रूप में इस्तेमाल किया | 1917 में चंपारण सत्याग्रह के समय राजनीतिक हथियार के रूप में इसे प्रयोग कर अंग्रेजी सरकार के सामने दुविधापूर्ण स्थिति उत्पन्न की | गाँधी को पूर्ण विश्वास था कि शक्तिशाली ब्रिटिश सत्ता को शक्ति की बदौलत चुनौती नहीं दी जा सकती थी |

गाँधी का मानना था कि यदि आन्दोलन हिंसक होता तो इसे बलपूर्वक दमन का अवसर मिल जाता जबकि अहिंसक आन्दोलन ब्रिटिश सत्ता के सामने दुविधा की स्थिति उत्पन्न करता | वे यह सोचने पर मजबूर होता कि आन्दोलन का दमन करे या शांतिपूर्ण अहिंसक आन्दोलन को अनुमति प्रदान करें | इससे ब्रिटिश शासन के नैतिक स्वरूप पर प्रश्न उठता और अगर आन्दोलन का दमन नहीं किया जाता तो आन्दोलन आगे बढ़ता और भारतियों के मानस पटल पर औपनिवेशिक सत्ता का जो भय था वह धीरे-धीरे समाप्त हो जाता | औपनिवेशिक सत्ता का बना बना रहना मुश्किल हो जाता |गाँधी अहिंसात्मक सत्याग्रह के जरिये औपनिवेशिक सत्ता के समक्ष दुविधापूर्ण स्थिति उत्पन्न की जिससे अंग्रेजों को महज तीन दशक के अन्दर भारत छोड़कर जाना पड़ा |

यह अहिंसक आन्दोलन का ही प्रभाव था जिससे कि महिलाओं, बूढों और बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की | अगर आन्दोलन हिंसक होता तो इसमें सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पाता और राष्ट्रिय आन्दोलन में सामाजिक आधार का विस्तार भी अधिक नहीं संभव हो पाता |

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संघर्ष-विराम-संघर्ष की गाँधीवादी रणनीति

गाँधी जनांदोलन की सीमा को अच्छी तरह जानते थे | संघर्ष हमेशा समान रूप से नहीं चला करता है | आन्दोलन में शामिल जनता की ऊर्जा कम होने लगती है और आन्दोलन विखरने का भय होता उस समय गाँधी औपनिवेशिक सत्ता से कुछ रियायतें हासिल करते हुए आन्दोलन को वापस ले लेते थे | इतिहासकार विपिन चन्द्र के अनुसार यह संघर्ष-विराम-संघर्ष की एक सोची-समझी रणनीति थी जिससे जनता की ऊर्जा अगले आन्दोलन के लिए बचती थी | गाँधी की यह रणनीति कुछ लोगों को पसंद नहीं आती थी | इस सन्दर्भ में गाँधी ने कहा कि "मैं एक जन नेता हूँ और जन नेता होने के नाते मुझे पता है कि जनता के दिमाग में क्या चल रहा है |" जैसे ही कोई आन्दोलन वापस लिया जाता वैसे ही गाँधी अपने रचनात्मक गतिविधियों चरखा, छूआछूत, स्वच्छता, शिक्षा, दलितोद्धार जैसे कार्यों में लग जाते |

यही कारण है कि गाँधीवादी चरण के दौरान या तो आन्दोलन चल रहा होता या फिर रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ-साथ धरना, विरोध-सभा, शांतिपूर्ण प्रदर्शन जैसे सामाजिक कार्यों में व्यस्त हो जाते | इन सभी गतिविधियों को सफल बनाने में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण एवं निर्णायक रही |

गाँधीवादी आन्दोलन की लोकप्रियता

गाँधी की लोकप्रियता इस बात में है कि उन्होंने राष्ट्रिय आन्दोलन के मुद्दों और टाइमिंग का अत्यंत सावधानीपूर्वक निर्धारण करते हुए इसके अहिंसक स्वरूप को सुनिश्चित किया और इसके जरिये समाज की सभी वर्गों की भागीदारी को सुनिश्चित करते हुए इसे जनांदोलन में तब्दील कर दिया | इसमें खिलाफत और नमक जैसे मुद्दों की अहं एवं निर्णायक भूमिका रही | अब राष्ट्रीय आन्दोलन सालों भर चलनेवाला आन्दोलन बन गया | राष्ट्रिय आन्दोलन के सामाजिक आधार का विस्तार हुआ और इसने जनांदोलन का रूप धारण कर लिया | गाँधी लगभग तीन दशक तक जनता के बीच लोकप्रिय बने रहे | यद्यपि उनके कोई भी आन्दोलन अपने समय सीमा के अन्दर लक्ष्य की प्राप्ति में सफल नहीं हो सका | फिर भी गाँधी बेहतर पर्यवेक्षक थे और उनका अनुभव-संसार कहीं अधिक व्यापक था | भारतीय समाज और भारतीय जनता की मनोदशा को समझने की उनकी अद्भुत क्षमता थी | अपनी इसी क्षमता के बदौलत भारतीय राजनीति में तीन दशक तक शीर्ष पर स्थापित रहे | उन्होंने जनता की शक्ति में अपनी आस्था प्रदर्शित की |

गाँधी ने जनांदोलन का ऐसा ढाँचा खड़ा किया जो सालों भर सक्रिय रहता था जिसके माध्यम से स्थानीय स्तर पर उभर रहे नेतृत्व से भी लगातार सम्पर्क बनाये रखा | जनता से जुड़ी चिन्ताओं एवं समस्याओं के प्रति सकारात्मक अनुक्रिया कर पाने में समर्थ था | गाँधी के अनुसार जनांदोलन का विकास नैतिक संघर्ष के रूप में होना चाहिए | इसमें विचारधारा एवं क्रिया-प्रणाली के बीच किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं होना चाहिए | कथनी एवं करनी में किसी प्रकार का अंतर नहीं तथा जो अनुशासन और नैतिकता पर बल देता हों और अपने जीवन में आत्मसात करता हों |

गाँधी ने आन्दोलन के लिए मुद्दों का चयन में भी सावधानियाँ बरतीं | चाहे असहयोग के लिए खिलाफत का प्रश्न हो या फिर सविनय अवज्ञा के लिए नमक का या फिर भारत छोड़ो आन्दोलन के लिए "करो या मरो" का सारे मुद्दे जनता के बीच उठाए गए इनके आधार पर उन्हें इकट्ठा करने की कोशिश की गयी | गाँधी एक कुशल प्रबंधक थे और रचनात्मक कार्यक्रमों के जरिये अपने जनाधार को मजबूती प्रदान करने की हमेशा कोशिश की | रचनात्मक कार्यक्रमों में महिलाओं एवं हरिजनों से जुड़े मुद्दों को तरजीह दी | हिन्दू-मुस्लिम एकता को अपने एजेंडे में शीर्ष पर रखने के कोशिश की | गाँधी के नेतृत्व में चलने वाला आन्दोलन भले ही अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को हासिल कर पाने में समर्थ नहीं रहा, लेकिन हर आन्दोलन के साथ राष्ट्रिय आन्दोलन एक कदम आगे बढ़ा और अपनी कुछ-न-कुछ उपलब्धियां हासिल की | इसी कारण जनता की आस्था बनी रही और उनके नेतृत्व में भारत की आजादी मिली |

मुल्यांकन

राष्ट्रिय राजनीति में गाँधी का आगमन से आन्दोलन का स्वरुप, विचार-धारा, सामाजिक आधार एवं दिशा में निर्णायक परिवर्तन आता है और यह परिवर्तन राष्ट्रिय आन्दोलन को तार्किक परिणति तक पहुँचाता है | यही कारण है कि 1919 से गाँधी का राष्ट्रिय राजनीति में प्रवेश से लेकर 1947 तक के कालखंड को भारतीय इतिहास में गाँधीवादी चरण माना जाता है | विभिन्न आन्दोलनों को उद्देश्य के दृष्टिकोण से देखा जाए तो 1920 में असहयोग आन्दोलन के समय एक वर्ष के अन्दर स्वराज्य का लक्ष्य रखा तो 1930 में सविनय अवज्ञा के समय पूर्ण स्वराज्य का तथा 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय करो या मरो का नारा देकर उद्देश्य सामने रखा | असहयोग तथा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सविनय अवज्ञा की समय गाँधी में औपनिवेशिक सत्ता के साथ मोल-भाव की सम्भावना को बनाये रखा |

गाँधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को सांगठनिक ढाँचा प्रदान करते हुए स्थानीय नेतृत्व एवं राष्ट्रिय नेतृत्व के बीच तालमेल को सुनिश्चित किया | कांग्रेस को एक अखिल भारतीय आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान करने की स्थिति में ला दिया | इससे राष्ट्रिय आन्दोलन का भौगोलिक तथा सामाजिक आधार का विस्तार हुआ | जनशक्ति में उनकी आस्था और जनता की नब्ज पर उनकी पकड़ ने ऐसे मुद्दों को पहचानने जो जनता के लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे, उनके आधार पर आम लोगों को संगठित करते हुए आन्दोलन की प्रभावशीलता को सुनिश्चित करने में उनकी मदद की | गाँधी के पहले राष्ट्रीय आन्दोलन में जन भागीदारी सीमित थी और आभिजात्य प्रकृति की थी | गाँधी के आगमन से इसकी प्रकृति में परिवर्तन हुआ और आन्दोलन के एजेंडे में भी | इससे आन्दोलन में जनाधार मजबूत होता दिखाई पड़ता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. विपिन चन्द्र - भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृ० सं० – 147-168
2. बी०एल० ग्रोवर - आधुनिक भारत का इतिहास, पृ० सं०- 301-308
3. डा० संजय सिंह (JNU)- आधुनिक भारतीय इतिहास कला एवं संस्कृति, पृ० सं०- 199-204
4. शेखर बंघोपाध्याय - पलासी से विभाजन तक और उसके बाद, पृ० सं०- 226-277
5. बी०डी० महाजन-आधुनिक भारत का इतिहास, पृ० सं०- 804-812
6. डॉ० कामेश्वर प्रसाद- भारत का इतिहास, पृ० सं०- 297-321
7. “Teach yourself History”, भारत का इतिहास, पृ० सं०- 366-368

RRIJM 2015, All Rights Reserved